

श्रीमद्दक्षिणकालिकास्तोत्रं ३

श्रीमद्दक्षिणकालिकास्तोत्रं ३

ॐ कृशादरि महाचण्डी मुक्तकशेति बलीप्रयिगे।  
कुलाचारप्रसन्नास्ये नमस्ते शङ्करप्रयिगे।  
घोरदंष्ट्ररे कोटोरकक्षिकटिशिवद प्रसाधिनी।  
घुरघोररावासफारे नमस्ते चतिवासिनी।।  
बन्धुकपुष्पसङ्काशे त्रिपुरे भयनाशिनी।  
भाग्योदयसमुत्पन्ने नमस्ते वरवन्दिनी।।  
जय देवि जगद्धात्री त्रिपुराद्ये त्रिदिबेते।  
भक्तभेद्ये वरदे देवि महिषनि नमोहस्तुते।।  
घोरबघिनवनिशाय कुलाचारसमृद्धये।  
नममि वरदे देवि मुण्डमाला वडिषने।।  
रक्तधारसमाकीर्णने करकाङ्क्षीवडिषति।  
सर्ववघिनहरे काली नमस्ते भैरवप्रयिगे।।  
नमस्ते दक्षिणामूर्त्ते काली त्रिपुरभैरवी।  
भिन्नाङ्गजनचयप्रक्षे प्रवीणशवसंस्थिते।।  
गलच्छरोगतिधारिणि स्मराननसरारुहे।  
पीनान्तकुचद्वन्द्वो नमस्ते घोरदक्षिणे।।  
आरक्तमुखशान्ताभिरिनते रालभिरिविराजति।  
शवद्वय कृतोत्तंसे नमस्ते मदवहिवले।।  
पञ्चाशन्मुण्डघटिमाला लोहति लोहिते।।  
नानामणविशिोभाद्ये नमस्ते ब्रह्मसवेति।।  
शवास्थिकितक्युर, शङ्ख-कङ्कन-मण्डति।  
शववक्षः समारुते नमस्ते वशिष्पुजति।।  
शवमांस कृतग्रसे अट्टहासे मुहुरमुहु।  
मुखशीघ्रस्मतिामोदे नमस्ते शिववन्दति।।  
खड्गमुण्डधरे वामे सव्ये (अ) भयवरप्रदे।  
दन्तुरे च महारौद्रे नमस्ते चण्डनादति।।  
त्वं गतिः परमा देवि त्वं माता परमशैवरी।  
त्राहि मां करुणासाद्रे नमस्ते चण्डनायकि।।  
नमस्ते कालिके देवि नमस्ते भक्तवंसले।  
मुखतां हर मे देवि प्रतप्ति जयदायिनी।।  
गद्यपद्यमयीं वागीं त्रकव्याकरणादकिम्।  
अनधीतगतां वदिषां देहि दक्षिणकालिके।।  
जयं देहि सभामध्ये धनं देहि धनागमे।  
देहि मे चरिजीवित्वं कालिके रक्ष दक्षिणे।।  
राज्यं देहि यशो देहि पुत्रान् दारान् धनं तथा।  
देहान्ते देहि मे मुक्तिं जगन्मातः प्रसिद मे।।  
ॐ मङ्गला भैरवी दूर्गा कालिका त्रिदिशेश्वरी।

উমা হমৈবতীকন্যা কল্যাণী ভরৈবশ্বেবরী।।  
কালী ব্রাহ্মী চ মাহেশী কটোমারী বশৈণবী তথা।  
বারাহী বাসলী চণ্ডী ত্বাং জগুৰ্মমুনয়ঃ সদা।।  
উগ্রতারতেতি তারতে শিবিত্যকেজটতে চ।  
লোকোত্তরতে কালতে গীয়তে কৃতভিঃ সদা।।  
যথা কালী তথা তারা তথা ছিন্না চ কুল্লকা।  
একমূর্ত্তশ্চিত্তুৰ্ভদে দবে ত্বং কালিকা পুরা।।  
একত্রবিধিা দবৌ কটোটিধাননত্রুপিনী।  
অঙ্গাঙ্গকিরৈনামভদেঃ কালকিতে প্ৰগীয়তে।  
শম্ভুঃ পঞ্চমুখনেবৈ গুণান্ বকত্বং ন তে ক্ৰমঃ।  
চাপল্যরৈয়ং কৃতং স্তোত্রং ক্ৰমস্ব বরদা ভব।।  
প্ৰাণান্ রক্ষ যশো রক্ষ পুত্রান্ দারান্ ধনং তথা।  
সর্ব্বকালে সর্ব্বদশে পাহি মাং দক্ষণিকালকি।।  
যঃ সংপূজ্য পঠে স্তোত্রং দবি বা রাত্রসিন্ধ্যায়োঃ।  
ধনং ধান্যং তথা পুত্রং লভতে নাত্র সংশয়।।  
শ্ৰীমন্মহাকালবরিচতি শ্ৰীমদ্দক্ষণিকালিকাস্তোত্রং সম্পূর্ণম্।।

